

५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ कायानुत्तमस्थूलं ॥ ११० ॥ १११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ एवंमुनिना उक्तः वीर्युन्मत्तः अवसीदत्तं नृपरायणो भूदित्यर्थः ॥  
रेमातेयघ्नतौ नित्यं नरनारायणादृषी ॥ अदूरादाश्रमं कंचिद्वासाथं मगमंतदा ॥ ५ ॥ तत्र चोराजिनधरं कृशमुच्चमतीव च ॥ अद्राक्षन्मृषिमायां तंतनुनामतपोध  
नं ॥ ६ ॥ अन्यैर्नैर्महाबाहोवपुषा ष्टगुणान्वितं ॥ कृशताचापिराजर्षेण दृष्टातादृशी क्वचित् ॥ ७ ॥ शरीरमपिराजैर्द्रतस्य कानिष्ठिकासमं ॥ ग्रीवाबाहू तथा पादौ के  
शाश्चाद्भुतदर्शनाः ॥ ८ ॥ शिरःकायानुरूपं च कर्णौ नेत्रे तथैव च ॥ तस्य वाक्कैव चेष्टा च सामान्ये राजसत्तम ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा हंतं कृशं विप्रं भीतः परमदुर्मनाः ॥ पादौ त  
स्याभिवाद्याथ स्थितः प्रांजलिरग्रतः ॥ १० ॥ निवेद्य नाम गोत्रे च पितरं च नरर्षभ ॥ प्रदिष्टे चासने तेन शनैरहमुपाविशं ॥ ११ ॥ ततः सकथयामास कथां धर्मा  
र्थसंहितां ॥ ऋषिमध्ये महाराजतनुर्धर्मभृतां वरः ॥ १२ ॥ तस्मिंस्तु कथयत्येव राजराजीवलोचनः ॥ उपायाज्जवनैरश्वैः सबलः सावरोधनः ॥ १३ ॥ स्मरन्पुत्र  
मरण्ये वै नष्टं परमदुर्मनाः ॥ भूरिद्युन्मपिता श्रीमान्वीरद्युन्मोमहायशः ॥ १४ ॥ इह द्रक्ष्यामि तं पुत्रं द्रक्ष्यामीति पार्थिवः ॥ एवमाशाह त्तो राजा चरन्वनमिदं पुरा  
॥ १५ ॥ दुर्लभः समयो द्रष्टुं नूनं परमधार्मिकः ॥ एकः पुत्रो महारण्येन दृष्टव्यः सकृत्तदा ॥ १६ ॥ दुर्लभः समयो द्रष्टुं नूनं परमदुर्मनाः ॥ तया परीतगान्त्रो हं मुमुक्षुर्ना  
त्र संशयः ॥ १७ ॥ एतच्छ्रुत्वा तु भगवांस्तनुर्मुनिवरोत्तमः ॥ अवाकश्चिरादध्यानपरो मुहुर्तमिव तस्थिवान् ॥ १८ ॥ तमनुध्यातं मालक्ष्य राजा परमदुर्मनाः ॥ उ  
वाच वाक्यं दोनात्मा मंदं दमिवासकृत् ॥ १९ ॥ दुर्लभं किं नु देवर्षे आशायाश्चैव किं महत् ॥ ब्रवीतु भगवानेतद्यदि गुह्यं न ते मयि ॥ २० ॥ मुनिरुवाच मह  
र्षिर्भगवांस्तेन पूर्वमासीद्विमानितः ॥ बालिशो बुद्धिमास्थाय मंदभाग्यतयात्मनः ॥ २१ ॥ अर्थयन्कलशं राजन्कांचनं वल्कलानि च ॥ अवज्ञापूर्वकेनापिन सं  
पादितवांस्ततः ॥ २२ ॥ निर्विण्णः स तुराजर्षिर्निराशः समपद्यत ॥ एवमुक्तो भिवाद्याथ तन्मृषिं लोकपूजितं ॥ श्रांतो वसीदद्भ्रमत्मा यथा त्वं न रसत्तम ॥ २३ ॥ अ  
र्घततः समानीय पाद्यं चैव महानृषिः ॥ आरण्ये नैव विधिनाराज्ञे सर्वं न्यवेदयत् ॥ २४ ॥ ततस्ते मुनयः सर्वपरिवार्य नरर्षभ ॥ उपाविशन् नरव्याघ्रसमर्षय इव ध्रुवं ॥  
॥ २५ ॥ अपृच्छंश्चैव तं तत्र राजानमपराजितं ॥ प्रयोजनमिदं सर्वमाश्रमस्य निवेशने ॥ २६ ॥ इति श्रीमहाभारते शांतिपराजधर्मानुशासनपञ्चमोऽध्यायः ॥  
तासु सप्तविंशतिः कशततमोऽध्यायः ॥ १२७ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥